E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 5 | May 2026

भारतीय समाज सुधारकों के कार्य: सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभाव

नलिनी गोवर्धन बनसोड [1], लवकुमार चिमनसिंग हारामी [2], राजेश मधुकर सोनकुसरे [3*]

[1]Assistant Professor (Sociology), Arts and Commerce Night College, Nagpur
[2]Assistant Professor (Political Science), Arts and Commerce Night College, Nagpur
[3]Assistant Professor (History), Arts and Commerce Night College, Nagpur

सारांश

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही सामाजिक असमानता, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और लिंग भेदभाव जैसी समस्याएँ रही हैं। 19वीं और 20वीं शताब्दी में, भारतीय समाज सुधारकों ने मध्यकालीन भारतीय समाज को आधुनिक बनाने और असमानता के खिलाफ लड़ने के लिए कार्य किये। भारतीय समाज सुधारकों ने असमानता, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और लिंग भेदभाव जैसी सामाजिक समस्याओं से लड़कर समाज की समग्र प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है। राजा राममोहन राय, महात्मा ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जैसे सुधारकों ने शिक्षा, लैंगिक समानता, अस्पृश्यता उन्मूलन और सामाजिक न्याय के लिए महत्वपूर्ण क्रांतिकारी कार्य किये। इस शोध पत्र में भारतीय समाज सुधारकों के कार्यों का सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। उनके प्रयासों से समाज में जागरूकता पैदा हुई, शिक्षा का प्रसार हुआ और महिलाओं तथा वंचित वर्गों को सशक्त बनाया गया। साथ ही, उनके कार्यों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत किया और लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित किया। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह जांचना है कि सती प्रथा, विधवा विवाह, महिला शिक्षा और अस्पृश्यता उन्मूलन जैसे सामाजिक आंदोलनों ने कैसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक मजबूत नैतिक आधार तैयार किया। सामाजिक समानता के बिना राजकीय स्वातंत्र्यता अपूर्ण है, यह विचार इन सुधारकों ने प्रस्तूत किये।

मुख्य शब्द: समाज सुधारक, सामाजिक, राजनीतिक, राजा राममोहन राय, ज्योतिराव फुले, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर।

1. परिचय:

भारतीय समाज का इतिहास विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों से समृद्ध है। इन परिवर्तनों की प्रक्रिया में समाज सुधारकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्नीसवीं सदी का भारत अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव, महिलाओं पर अत्याचार और अंधविश्वास की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। ऐसे काल में पाश्चात्य शिक्षा एवं मानवतावादी विचारधारा के प्रभाव से एक वैचारिक क्रांति पैदा हो गयी। भारतीय समाज सुधारकों ने न केवल धर्म की अवांछनीय प्रथाओं का विरोध किया, बल्कि समाज की समग्र प्रगति के लिए नई विचारधाराओं और मूल्यों को भी विकसित किया।

19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत में सामाजिक सुधार आंदोलनों ने गति पकड़ी। इन आंदोलनों ने जाति व्यवस्था, लैंगिक असमानता, अंधविश्वास, शिक्षा में असमानता, बाल विवाह, सती जैसे मुद्दों पर हमला किया। इन सुधारकों

*Corresponding Author Email: rmsonkusare99@gmail.com
Published: 08 May 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i5.45724
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

के कार्यों का सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पड़ा।

2. अनुसंधान उद्देश्य और अनुसंधान पद्धति:

इस शोध निबंध में भारतीय समाज सुधारकों के कार्य, उनकी विचारधाराओं के समाज पर प्रभाव का अध्ययन, उनकी विचारधाराओं के कार्य और सामाजिक परिवर्तनों पर प्रभाव को समझना, सामाजिक सुधारों के कारण राजनीतिक प्रक्रिया में होने वाले परिवर्तनों का विस्तार से अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र के लिए ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक तरीकों का उपयोग किया गया है। विभिन्न पुस्तकों, जीवनियों और इंटरनेट वेबसाइटों से जानकारी का अध्ययन करके जानकारी संकलित की गई है।

3. सामाजिक सुधारों की पृष्ठभूमि:

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में आधुनिक शिक्षा, पश्चिमी सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार हुआ। इसने भारतीयों को तर्कवाद, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों से परिचित कराया। इस अवधि के दौरान समाज में जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता, महिलाओं की खराब स्थिति, शिक्षा की कमी, धार्मिक अंधविश्वास, सामाजिक असमानता आदि जैसी कई समस्याएं थीं। इन समस्याओं का समाधान खोजने के लिए कई समाज सुधारक आगे आए और विभिन्न आंदोलनों का गठन किया।

4. 19वीं और 20वीं सदी के भारत के समाज सुधारक और उनके कार्य:

समाज सुधारक वह व्यक्ति होता है जो अवांछनीय प्रथाओं, परंपराओं, भेदभाव, अन्याय और अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाकर समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अथक प्रयास करता है। या फिर जो लोग समाज को आगे बढ़ाने और मानवीय मूल्यों को विकसित करने के लिए पुरानी मान्यताओं को तोड़ने में अपना जीवन बिता देते हैं, उन्हें समाज सुधारक कहा जाता है।

भारत में 19वीं और 20वीं सदी में कई समाज सुधारक हुए जिन्होंने समाज की अवांछनीय प्रथाओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं या अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश की। राजा राममोहन राय, महात्मा जोतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महर्षि धोंडो केशव कर्वे, पंडिता रमाबाई...आदि प्रमुखों के नाम लिये जा सकते हैं। भारत में समाज सुधारकों ने समाज में अन्याय, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता को खत्म करने के लिए महत्वपूर्ण काम किया है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत में कई प्रभावशाली समाज सुधारक हुए, इन सुधारकों के कार्य और योगदान को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

4.1. राजा राममोहन राय (भारतीय ज्ञानोदय के जनक):

राजा राममोहन राय (1772 से 1833) को आधुनिक भारत का जनक और भारतीय ज्ञानोदय का अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में वैचारिक क्रांति लाने और अवांछनीय प्रथाओं के विरुद्ध महान कार्य किया। राजा राममोहन राय की सबसे बड़ी उपलब्धि सती प्रथा के खिलाफ उनकी लड़ाई थी। 1811 में अपनी भाभी को सती होते देख वे सदमे में आ गए और उन्होंने इस अमानवीय प्रथा के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया। उनके लगातार प्रयास के कारण, 'लॉर्ड विलियम बेंटिक' ने 1829 में सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित कर दिया।

उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, मूर्तिपूजा और कर्मकांडों का विरोध करने के लिए 1828 में 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की। उन्होंने प्रस्तावित किया कि ईश्वर एक है (एकेश्वरवाद) और सभी धर्म समान हैं। उन्होंने यह साबित करने के लिए उपनिषदों का अध्ययन किया कि हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा अनिवार्य नहीं है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के अधिकार पर जोर दिया, बहुविवाह और बाल विवाह जैसी प्रथाओं का कड़ा विरोध किया। इसके अलावा उन्होंने

इस बात पर जोर दिया कि महिलाओं को अपने पिता की संपत्ति में विरासत का अधिकार मिलना चाहिए. उन्होंने पश्चिमी शिक्षा और विज्ञान की वकालत की। इसके लिए उन्होंने 1817 में 'डेविड हेयर' की मदद से कोलकाता में 'हिन्दू कॉलेज' की शुरुआत की। उनकी सोच के कारण ही भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव पड़ी और समाज को एक नई दिशा मिली।

4.2. महात्मा ज्योतिराव फुले:

महात्मा ज्योतिराव फुले (1827 से 1890) महाराष्ट्र और भारत के एक महान समाज सुधारक, विचारक और लेखक थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज में असमानता को खत्म करने और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। ज्योतिराव फुले के कारण ही भारत में बहुजन समाज और महिलाओं के लिए शिक्षा के दरवाजे खुले। ज्योतिराव ने महिला शिक्षा की नींव रखी। जब तत्कालीन समाज में महिलाओं को शिक्षा से वंचित किया जाता था, तब उन्होंने 1848 में पुणे के भिड़ेवाड़ा में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला। उन्होंने अपनी पत्नी 'सावित्रीबाई फुले' को खुद शिक्षिका बनने की शिक्षा दी, ताकि वह लड़कियों को पढ़ा सकें।

24 सितम्बर 1873 को उन्होंने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। इस सोसायटी का आदर्श वाक्य था "सर्वसाक्षी जगत्पति, आय नोच मध्यस्थि"। उन्होंने लोगों के मन में यह विचार डाला कि ईश्वर की पूजा के लिए किसी मध्यस्थ (पंडे/पुजारी) की जरूरत नहीं है। समाज में छुआछूत की प्रथा को नष्ट करने के लिए उन्होंने अपने घर में पानी की टंकी अछूतों के लिए खोल दी। उन्होंने जीवन भर शोषितों और वंचितों को सम्मान के साथ जीने के अधिकार के लिए संघर्ष किया।

किसानों के सवालों पर ज्योतिराव ने उठाई आवाज. उन्होंने साहूकारों और ब्रिटिश सरकार द्वारा किसानों के शोषण के खिलाफ लिखा। अपनी पुस्तक 'शेतकऱ्यांचा असूड' में उन्होंने कृषि और किसानों की दुर्दशा का जीवंत चित्रण किया है। उनका प्रसिद्ध विचार "विद्येविना मती गेली, मतीविना नीती गेली, नीतीविना गती गेली, गतीविना वित्त गेले, वित्ताविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले!" ये था।

4.3. सावित्रीबाई फुले:

क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले (1831 से 1897) भारत की पहली महिला शिक्षिका, प्रधानाध्यापिका और महान समाज सुधारक थीं। उन्होंने महात्मा ज्योतिराव फुले के साथ कंधे से कंधा मिलाकर महिला शिक्षा और सामाजिक असमानता के खिलाफ लड़ाई लड़ी। 9 साल की उम्र में सावित्रीबाई का विवाह ज्योतिराव फुले से हुआ। विवाह के बाद ज्योतिराव ने उन्हें घर पर ही शिक्षा दी। 1848 में, जब पुणे के भिड़ेवाड़ा में पहला लड़कियों का स्कूल खोला गया, तो सावित्रीबाई प्रधानाध्यापिका और शिक्षिका के रूप में शामिल हुईं। उस समय महिलाओं का पढ़ना पाप माना जाता था। जब वह स्कूल में पढ़ाने जाती थी तो लोग उन पर गोबर, पत्थर और कीचड़ फेंकते थे। सावित्रीबाई अपने बैग में एक अतिरिक्त साड़ी रखती थीं ताकि जब वह स्कूल पहुंचे तो क्षतिग्रस्त साड़ी को बदल सकें और लड़कियों को पढ़ा सकें। उन्होंने बिना डगमगाए इन सभी कठिनाइयों का सामना किया।

उन्होंने विधवाओं के साथ होने वाले अन्याय के कारण पैदा हुए बच्चों की रक्षा के लिए अपने घर में ही इस होम की शुरुआत की थी। उन्होंने ऐसी ही एक विधवा ब्राह्मण महिला के बेटे (यशवंत) को गोद लिया और उसे डॉक्टर बनाया। उन्होंने पुणे में विधवाओं के केशवपन (बाल काटने की प्रथा) के खिलाफ नाभिकों (नाइयों) की हड़ताल का नेतृत्व किया। 1897 में पुणे में प्लेग की भयानक महामारी फैल गयी थी। सावित्रीबाई ने अपनी जान की परवाह किये बिना मरीजों की सेवा की। प्लेग के मरीज़ों को अपनी पीठ पर अस्पताल ले जाते समय उन्हें भी यह बीमारी हो गई और 10 मार्च 1897 को उनकी मृत्यु हो गई।

4.4. ईश्वरचंद्र विद्यासागर:

ईश्वरचंद्र विद्यासागर (1820 से 1891) 19वीं सदी के भारतीय ज्ञानोदय में एक अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। वह न केवल एक महान समाज सुधारक थे, बल्कि एक महान शिक्षाविद्, लेखक और मानवतावादी विचारक भी थे।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर का सबसे बड़ा योगदान विधवा विवाह के लिए उनकी लड़ाई थी। उन दिनों बाल विवाह के कारण बहुत सी लड़कियाँ कम उम्र में ही विधवा हो जाती थीं और उनका जीवन बहुत कठिन हो जाता था। उन्होंने प्रमाणों के साथ सिद्ध किया कि हिंदू धर्म में विधवा विवाह वर्जित नहीं है। यह उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि ब्रिटिश सरकार ने 1856 में 'हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' पारित किया। वे केवल कानून बनाकर ही नहीं रुके, बल्कि अपने बेटे की शादी एक विधवा से करके समाज में एक मिसाल कायम की। उन्हें 'आधुनिक बंगाली गद्य का जनक' माना जाता है। उन्होंने शिक्षा की सुविधा के लिए महान कार्य किये। उन्होंने कोलकाता के संस्कृत कॉलेज के दरवाजे केवल ब्राह्मणों के लिए ही नहीं, बल्कि सभी जातियों के छात्रों के लिए खोल दिये। उन्होंने बंगाल में अनेक बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

4.5. स्वामी दयानंद सरस्वती:

स्वामी दयानंद सरस्वती (1824 से 1883) आधुनिक भारत के इतिहास में सबसे महान धार्मिक और समाज सुधारकों में से एक थे। उन्होंने हिंदू धर्म की अवांछनीय रीति-रिवाजों और परंपराओं पर हमला किया और मानवीय समानता और वैदिक सत्य की वकालत की। स्वामीजी ने 10 अप्रैल 1875 को मुंबई में 'आर्य समाज' की स्थापना की। "वेदों की ओर वापस जाओ" उनका मुख्य संदेश था। उनका दृढ़ मत था कि वेदों का ज्ञान सर्वोत्तम एवं सत्य है।

स्वामी दयानंद सरस्वती का कार्य केवल धर्म तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने सामाजिक परिवर्तन के लिए भी महान कदम उठाए। उन्होंने जन्म पर आधारित चतुर्वर्ण प्रणाली का विरोध किया और गुण-कर्म पर आधारित प्रणाली की वकालत की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिलाओं को भी वेदों का अध्ययन करने और शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है। उन्होंने बाल विवाह की प्रथा की कड़ी आलोचना की और विधवा विवाह का समर्थन किया।

स्वामीजी की मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों ने उनकी स्मृति में 'दयानंद एंग्लो-वैदिक' स्कूलों और कॉलेजों की एक श्रृंखला शुरू की। आज भी, ये संस्थान पश्चिमी विज्ञान और भारतीय वैदिक संस्कृति को मिलाकर शिक्षा प्रदान करते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती को 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग करने वाला पहला भारतीय विचारक माना जाता है। उन्होंने "स्वदेशी" वस्तुओं के उपयोग की वकालत की, जो बाद में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक प्रमुख प्रेरणा बन गई।

4.6. राजर्षि शाहू महाराज:

शाहू महाराज (1874 से 1922) न केवल कोल्हापुर राज्य के छत्रपति थे, बल्कि आधुनिक भारत के सामाजिक न्याय आंदोलन के मुख्य आधार भी थे। उन्होंने महात्मा फुले की विरासत को आगे बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। शाहू महाराज ने प्रशासन में पारदर्शिता लायी और बहुजन समाज को सत्ता में भागीदारी दी। 26 जुलाई 1902 को 'करवीर गजट' में प्रकाशित घोषणापत्र के अनुसार उन्होंने पिछड़े वर्गों के लिए 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित की। यह निर्णय लेने में उन्होंने बहुत साहस दिखाया। उन्होंने अपने राज्य में सार्वजनिक कुएँ, स्कूल और अस्पताल सभी के लिए खोल दिये।

शाहू महाराज जानते थे कि शिक्षा के बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने कोल्हापुर में मराठा, जैन, लिंगायत, मुस्लिम, बढ़ई जैसी विभिन्न जातियों और धर्मों के बच्चों के लिए अलग-अलग छात्रावास बनाए। इससे ग्रामीण क्षेत्रों

में गरीब बच्चों की शिक्षा में सुविधा हुई। उन्होंने 1917 में अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा अधिनियम पारित किया, जो बाद में भारतीय संविधान में शिक्षा के अधिकार का जन्मदाता बना।

शाहू महाराज ने छुआछूत के विरुद्ध सख्त कदम उठाये। 'मनगांव परिषद' (1920) में उन्होंने डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के नेतृत्व को स्वीकार किया और लोगों से कहा, "आपको अपना नेता मिल गया है।" डॉ. अम्बेडकर ने 'मूकनायक' अखबार शुरू किया, जिसे उन्होंने भारी आर्थिक सहयोग दिया। उन्होंने एक दलित 'गंगाराम कांबले' को एक होटल में ठहराया और खुद वहां चाय पीने चले गये, ताकि समाज में समानता का संदेश फैले.

किसानों के राजा के रूप में उन्होंने कृषि में आधुनिकता जोड़ी। उन्होंने कोल्हापुर को अपने अधीन करने के लिए भोगावती नदी पर 'राधानगरी' बाँध का निर्माण कराया। उन्होंने किसानों को साहूकारों के जाल से मुक्त कराने के लिए सहकारी समितियों की स्थापना को प्रोत्साहित किया। कोल्हापुर में कपड़ा मिल शुरू करके औद्योगीकरण की नींव रखी गई। कोल्हापुर को 'कुश्ती का गढ' बनाने में महाराज ने बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने पहलवानों के लिए 'खासबाग मैदान' बनवाया और मल्लों को शाही आश्रय दिया। उन्होंने संगीत, नाटक और चित्रकला के क्षेत्र में कलाकारों की हमेशा मदद की।

4.7. पंडिता रमाबाई:

पंडिता रमाबाई (1858 से 1922) आधुनिक भारत के सबसे प्रखर, विद्रोही और निपुण समाज सुधारकों में से एक थीं। महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा के लिए उनकी लड़ाई को वैश्विक स्तर पर भी देखा गया है। रमाबाई को उनके पिता 'अनंतशास्त्री डोंगरे' ने संस्कृत में शिक्षा दी थी। 1878 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उनकी अपार विद्वता के लिए उन्हें 'पंडिता' और 'सरस्वती' की उपाधि से सम्मानित किया। ऐसी डिग्रियाँ प्राप्त करने वाली वह भारत की पहली महिला थीं। पुणे आने के बाद उन्होंने महिलाओं के उद्धार और बाल विवाह के खिलाफ काम करने के लिए 'आर्य महिला समाज' की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की आत्मचेतना को जागृत करना था। अमेरिका से लौटने के बाद उन्होंने विधवाओं और निराश्रित लड़कियों की शिक्षा के लिए मुंबई (बाद में पुणे) में 'शारदा सदन' शुरू किया। यह संगठन सचमुच विधवाओं के लिए आशा की किरण बन गया है। बाद में उन्होंने केडगांव (पुणे) में 'मुक्ति सदन' की स्थापना की, जहां सैकड़ों अनाथ बच्चों और परित्यक्त महिलाओं को आश्रय दिया गया।

अमेरिका में रहते हुए उन्होंने अंग्रेजी में 'द हाई कास्ट हिंदू वुमन' किताब लिखी। इसमें उन्होंने हिंदू धर्म में ऊंची जाति की महिलाओं की दयनीय स्थिति का चित्रण करके दुनिया का ध्यान आकर्षित किया। रमाबाई ने इंग्लैंड और अमेरिका की यात्रा की। वह वहां महिलाओं की आजादी से बहुत प्रभावित हुईं। इंग्लैंड में रहते हुए उन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया, जिससे उस समय के रूढ़िवादी समाज में बड़ी हलचल मच गई। हालाँकि, अपने धर्म परिवर्तन के बावजूद, उन्होंने अपने काम की प्रकृति को मानवतावादी बनाए रखा। 'हंटर कमीशन' के समक्ष गवाही देते हुए उन्होंने मांग की थी कि महिलाओं को मेडिकल शिक्षा मिलनी चाहिए। मुक्ति सदन में उन्होंने महिलाओं को छपाई, बुनाई, कृषि जैसे विभिन्न उद्योगों में प्रशिक्षित किया, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होंने 'ब्रेल' लिपि का उपयोग करके नेत्रहीन लोगों के लिए शिक्षा की सुविधा प्रदान की।

4.8. स्वामी विवेकानन्द:

स्वामी विवेकानन्द (1863 से 1902) स्वामी विवेकानन्द न केवल एक आध्यात्मिक नेता थे, बल्कि एक प्रभावी समाज सुधारक भी थे। उन्होंने पूरी दुनिया को भारत की प्राचीन आध्यात्मिक विरासत और वेदांत के महत्व का लोहा मनवाया। स्वामीजी की वैश्विक प्रसिद्धि 'शिकागो' के 'विश्व धर्म सम्मेलन' से प्रारम्भ हुई। उन्होंने अपना भाषण "मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों" शब्दों के साथ शुरू किया, जिससे पश्चिमी दुनिया को 'वसुधैव कुटुंबकम' (पूरी दुनिया

एक परिवार है) की भारतीय अवधारणा का परिचय दिया गया। उन्होंने दुनिया को बताया कि हिंदू धर्म सिर्फ एक संप्रदाय नहीं बल्कि एक विशाल दृष्टिकोण है जो सभी धर्मों को अपने अंदर समाहित करता है। अपने गुरु 'रामकृष्ण परमहंस' के महानिर्वाण के बाद स्वामीजी ने उनकी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए 1 मई 1897 को 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। इस संगठन ने शिक्षा, स्वास्थ्य और आपदा राहत जैसे सामाजिक क्षेत्रों में बहुत योगदान दिया है।

स्वामीजी युवाओं की शक्ति में दृढ़ता से विश्वास करते थे। उनका जन्मदिन (12 जनवरी) भारत में 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने युवाओं को 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको' का मंत्र दिया। स्वामीजी के अनुसार भगवान केवल मंदिर में ही नहीं बल्कि हर प्राणी में हैं। दरिद्री नारायण: उनका विचार था कि गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। उन्होंने समाज में अंधविश्वास, जातिवाद और छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाई। भारत को गुलामी की मानसिकता से बाहर निकालने और स्वाभिमान जगाने का उनका ओजस्वी संदेश आज भी उतना ही प्रेरणादायक है।

4.9. महर्षि धोंडो केशव कर्वे:

महर्षि धोंडो केशव कर्वे (1858 से 1962) आधुनिक भारत के इतिहास में एक ऋषितुल्य व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन के 100 से अधिक वर्ष केवल और केवल महिलाओं की मुक्ति और शिक्षा के लिए समर्पित कर दिये। सभी लोग उन्हें प्रेम और आदर से 'अन्नासाहेब कर्वे' कहते थे। अन्नासाहेब का सबसे बड़ा काम उनके द्वारा स्थापित महिला विश्वविद्यालय था। 1916 में उन्होंने पुणे में भारत के पहले महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। बाद में 'विट्ठलदास ठाकरसी' द्वारा दिए गए दान के कारण इस विश्वविद्यालय का नाम 'श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी (एसएनडीटी) महिला विद्यापीठ' रखा गया।

उस समय विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। कर्वे ने केवल उपदेश ही नहीं दिया, बल्कि स्वयं आचरण भी किया। 1893 में उन्होंने 'विधवा व्यवसायी मंडली' नामक संगठन की स्थापना की। उन्होंने स्वयं एक विधवा (आनंदीबाई उर्फ बया कर्वे) से विवाह किया और समाज के सामने एक साहसी उदाहरण प्रस्तुत किया। 1896 में उन्होंने महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद करने के लिए पुणे में 'अनाथ बालिकाश्रम' की शुरुआत की। बाद में इसे 'हिंगाने स्त्री शिक्षण संस्थान' में बदल दिया गया, जहाँ हजारों विधवाओं और निराश्रित लड़कियों को शिक्षा और आश्रय मिला। उन्होंने ऐसे कार्यकर्ताओं को तैयार करने के उद्देश्य से 'निष्काम कर्म मठ' की स्थापना की, जो अपना जीवन समाज की सेवा के लिए समर्पित कर देंगे। इसके माध्यम से उन्होंने यह विचार विकसित किया कि "सार्वजनिक सेवा ही ईश्वर सेवा है"। 1958 में (उनके 100वें जन्मदिन पर) भारत सरकार ने उनके महान कार्य के लिए उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

4.10. न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे:

न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे (1842 से 1901) एक महान समाज सुधारक, अर्थशास्त्री, इतिहासकार और भारतीय राजनीति में 'नरम' विचारधारा के स्तंभ थे। उन्हें 'हिन्दी अर्थशास्त्र का जनक' और 'स्नातकों का मुकुटमणि' कहा जाता है। रानाडे ने सामाजिक सुधार के लिए संस्थागत मार्ग अपनाया। उन्होंने प्रार्थना समाजों के माध्यम से मूर्तिपूजा को अस्वीकार करते हुए एकेश्वरवाद और सामाजिक समानता की वकालत की। 1865 में उन्होंने 'विधवा विवाह समिति' संस्था की स्थापना की और विधवा विवाह को कानूनी और सामाजिक मान्यता दिलाने का प्रयास किया। मराठी भाषा और अलंकार को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने 1875 में 'वक्त्रवतोजक सभा' की स्थापना की, जो आज भी कार्यरत है।

रानाडे ने 1870 में 'पुणे पब्लिक असेंबली' को सक्रिय किया। इस बैठक के माध्यम से उन्होंने किसानों की शिकायतों

को सरकार तक पहुंचाने का काम किया। उन्होंने 1885 में कांग्रेस के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह सक्रिय राजनीति से दूर रहे क्योंकि वह स्वयं सरकारी सेवा (न्यायाधीश) में थे, हालांकि उन्हें कांग्रेस के 'सलाहकार' के रूप में जाना जाता था। रानाडे ने भारत की गरीबी का कारण कृषि पर अत्यधिक निर्भरता और उद्योग की कमी को बताया। उन्होंने 'मुक्त व्यापार' की ब्रिटिश नीति का विरोध किया और महसूस किया कि भारतीय उद्योगों को सरकार द्वारा संरक्षित किया जाना चाहिए। उनके आर्थिक विचारों के कारण उन्हें 'भारतीय अर्थशास्त्र का जनक' कहा जाता है। उन्होंने मराठा इतिहास के प्रति दुनिया का नजरिया बदल दिया। अपनी पुस्तक 'राइज़ ऑफ द मराठा पावर' में उन्होंने साबित किया कि मराठा साम्राज्य सिर्फ एक 'लुटेरा' राज्य नहीं था बल्कि राष्ट्र निर्माण में एक व्यवस्थित कदम था। रानाडे ने महाराष्ट्र में कई संगठनों का एक नेटवर्क बुना। इसीलिए उन्हें 'संस्थाओं का संस्थापक' भी कहा जाता है। उन्होंने 'सोशल काउंसिल', 'इंडस्ट्रियल काउंसिल' जैसे मंचों से राष्ट्रहित के मुद्दे उठाए।

4.11. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर:

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मऊ में हुआ था। वह एक महान समाज सुधारक, न्यायविद्, अर्थशास्त्री और भारतीय संविधान के वास्तुकार थे। उन्होंने जीवन भर समाज में छुआछूत और जातिगत भेदभाव के खिलाफ संघर्ष किया। वह भारत के पहले कानून मंत्री थे और उन्होंने भारत के संविधान का मसौदा तैयार किया था। उन्होंने शिक्षा को बहुत महत्व दिया और "सीखो, संगठित हो, संघर्ष करो" का संदेश दिया। उन्होंने 1856 में बौद्ध धर्म अपना लिया। 6 दिसंबर 1956 को उनकी मृत्यु हो गई। डॉ. अंबेडकर का काम आज भी सामाजिक समानता और न्याय के लिए प्रेरणा है।

स्वतंत्रता के बाद, वह भारत के संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष थे। उन्होंने विभिन्न देशों के संविधानों का अध्ययन किया और भारत के लिए विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान तैयार किया। इसीलिए उन्हें 'भारत के संविधान का वास्तुकार' कहा जाता है।

उन्होंने दलितों को समाज में मानवाधिकार दिलाने के लिए 'महादचा सत्याग्रह' और 'कलाराम मंदिर सत्याग्रह' किया। उन्होंने महिलाओं को कानूनी अधिकार दिलाने के लिए 'हिन्दू कोड बिल' पेश किया। उन्होंने भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने श्रमिकों के लिए 8 घंटे काम करने के घंटे, बीमा और महंगाई भत्ता जैसे कानून पेश किए।

5. भारतीय समाज सुधारकों के कार्यों का सामाजिक क्षेत्र पर प्रभाव:

भारतीय समाज सुधारकों ने महाराष्ट्र सहित पूरे भारत की सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक संरचना में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय समाज सुधारकों के कार्यों का सामाजिक प्रभाव बहुत व्यापक और दीर्घकालिक है। उन्होंने समाज में अनुचित रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों और असमानता को दूर करके एक आधुनिक, समतामूलक समाज के निर्माण में बहुत योगदान दिया। उनके कार्य के सामाजिक प्रभाव को इस प्रकार समझाया जा सकता है:

1. समाज सुधारकों के कार्यों का महिलाओं की स्थिति पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा।

- महात्मा जोतीराव फुले और सावित्रीबाई फुले ने 1948 में पुणे में पहला गर्ल्स स्कूल शुरू करके महिलाओं के लिए शिक्षा के द्वार खोले। इससे महिलाओं में आत्म-चेतना जागृत हुई।
- राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों से सती प्रथा समाप्त हुई और विधवा विवाह को कानूनी मान्यता मिली।
- महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने लड़कियों के लिए अनाथालय और महिला विश्वविद्यालय की स्थापना करके महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का काम किया।

2. महात्मा ज्योतिराव फुले और डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनके प्रयासों से समाज में समानता की भावना पैदा हुई और दलितों तथा वंचित वर्गों को अधिकार मिले।

3. महात्मा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज ने पुरोहितवाद की सर्वोच्चता को चुनौती दी। किसानों, मजदूरों एवं बहुजन समाज को उनके शोषण के प्रति जागरूक किया गया। यह विचार स्थापित हुआ कि भगवान और भक्तों के बीच किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। इससे समाज में तर्कवादी विचारों का प्रसार हुआ।

4. समाज सुधारकों ने न केवल स्कूल शुरू किये, बल्कि शिक्षा का सार्वभौमिकरण भी किया। कर्मवीर भाऊराव पाटिल ने रयात शिक्षण संस्था के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब बच्चों के लिए 'कामावा आणि शिका' योजना लागू की। प्राचीन शिक्षा प्रणाली की त्रुटियों को दूर कर आधुनिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा पर बल दिया गया।

5. समाज सुधारकों ने समाज की अवांछनीय रीति-रिवाजों, परंपराओं तथा अंधविश्वासों की कड़ी आलोचना की। गोपाल गणेश आगरकर ने 'सुधाकर' पत्र में इहवाद और बुद्धिप्रमाणवाद को प्रस्तुत किया। समाज में "जो प्रत्यक्ष सिद्ध हो, उसे स्वीकार करना चाहिए" की सोच के कारण लोगों की मनोवृत्ति में वैज्ञानिक परिवर्तन आया।

6. स्वामी विवेकानन्द ने धर्म में आडंबर और अंधविश्वास को कम करने का प्रयास किया। उन्होंने मानवता पर आधारित धर्म की अवधारणा पेश की, जिससे धार्मिक सहिष्णुता बढ़ी।

6. भारतीय समाज सुधारकों के कार्यों का राजनीतिक क्षेत्र पर प्रभाव:

19वीं और 20वीं शताब्दी में भारतीय समाज सुधारकों द्वारा की गई सामाजिक क्रांति की नींव ही बाद में भारत के राजनीतिक आंदोलन का आधार बनी। इन सुधारकों ने न केवल सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, बल्कि राजनीतिक लोकतंत्र और समानता के बीज भी बोये। भारतीय समाज सुधारकों के कार्यों का राजनीतिक क्षेत्र पर प्रभाव निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझाया जा सकता है:

1. महात्मा जोतीराव फुले और सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा के माध्यम से बहुजन समाज और महिलाओं में आत्मचेतना जागृत की। उनके द्वारा रखा गया 'सत्य-शोधक' विचार आगे चलकर एक राजनीतिक आंदोलन में बदल गया। इसके चलते राजनीति में समावेशी प्रतिनिधित्व की मांग पर सिर्फ ऊंची जातियों का ही दबदबा नहीं रहा.

2. राजर्षि शाहू महाराज ने 1902 में हाशिये पर पड़े समूहों को शक्ति देने के लिए कोल्हापुर राज्य में आरक्षण नीति लागू की। इस निर्णय को भारत के संविधान में आरक्षण प्रावधानों की नींव माना जाता है। उन्होंने यह विचार स्थापित किया कि सामाजिक लोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र अधूरा है।

3. भारत में समाज सुधारकों ने सती प्रथा, विधवा विवाह और महिला शिक्षा के उन्मूलन के लिए संघर्ष किया, जिसके परिणामस्वरूप आज भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा 'हिन्दू कोड बिल' के माध्यम से महिलाओं को कानूनी अधिकार दिलाने का प्रयास इसी सामाजिक सुधार आन्दोलन का परिणाम था।

4. भारतीय सुधारकों ने भारतीय समाज के दोषों को दूर करने का प्रयास किया, ताकि एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण किया जा सके। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में इन समाज सुधारकों और उनके विचारों का बहुत बड़ा योगदान था।

5. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने प्रत्यक्ष राजनीतिक और संवैधानिक तरीकों से सामाजिक सुधार के संघर्ष का नेतृत्व किया। अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनुच्छेद 17), समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14) और वयस्क मताधिकार समाज सुधारकों के लंबे संघर्ष का फल थे।

7. निष्कर्ष:

19वीं और 20वीं शताब्दी के भारतीय समाज सुधारकों का कार्य केवल सामाजिक परिवर्तन तक ही सीमित नहीं था, बल्कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक संरचना पर भी इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा। यह आधुनिक भारत के निर्माण का बीज था। राजा राममोहन राय, महात्मा फुले, राजर्षि शाहू महाराज और डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा शुरू किया गया यह सुधार आंदोलन और अधिक गहरा और व्यापक हो गया।

इन सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव राजनीतिक क्षेत्र में और अधिक स्पष्ट है। समाज सुधारकों के कार्यों के कारण भारतीय शासन में लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, समानता और धर्मनिरपेक्षता जैसे सिद्धांतों को प्रमुखता मिली। विशेषकर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के नेतृत्व में बनाये गये भारतीय संविधान ने इन सभी सिद्धांतों को संस्थागत रूप दिया, जिससे भारत एक न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गया। साथ ही महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए किये गये प्रयासों से महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में समान अवसर मिलने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस कारण आज महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व इन्हीं सुधारकों के कार्यों का परिणाम है।

कुल मिलाकर, भारतीय समाज सुधारकों द्वारा किए गए कार्यों ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू की, जिसने राजनीतिक परिवर्तन को और तेज कर दिया। उनके विचारों ने भारतीय समाज को अधिक उन्नत, समतावादी और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित बनाया। इसलिए आज के आधुनिक भारत के निर्माण में भारतीय समाज सुधारकों का योगदान अत्यंत मौलिक एवं अद्वितीय माना जाता है।

8. विशेष नोट:

19वीं और 20वीं सदी के भारतीय समाज सुधारकों ने न केवल रूढ़िवादिता को चुनौती दी, बल्कि आधुनिक भारत की नींव रखी। भारतीय समाज सुधारकों का कार्य केवल सामाजिक परिवर्तन तक ही सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने भारत की राजनीतिक संरचना को भी आकार दिया। उनके विचारों का प्रभाव आज भी भारतीय समाज और शासन व्यवस्था में देखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. खाम्बेकर, बनाम. एस. (2018)। आधुनिक भारत के निर्माता: राजा राममोहन राय से डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर तक। स्नेहवर्धन प्रकाशन।
2. कीर, ध. (2014)। महात्मा जोतीराव फुले: हमारे समाज सुधारक। लोकप्रिय प्रकाशन.
3. पवार, जे. (2010). महाराष्ट्र में सामाजिक सुधारों का इतिहास। मेहता पब्लिशिंग हाउस।
4. Chandra, B. (2016). India's struggle for independence. Penguin Random House India.
5. https://vajiramandravi.com/upsc-exam/social-reformers/